2019-20

Vid Diploma in Performing Art

II Year (V.D.P.A.)

Private

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory		
	Paper- I	100	33
	Paper-II	100	33
02.	Practical – I Demonstration & Viva	100	33
	Grand Total	300	99

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
विद् डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट अंतिम वर्श (V.D.P.A.)

प्रथम प्रश्न
पत्र–तबला

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

समयः 3 घंटे

इकाई 1

कर्नाटक ताल पद्वति एवं ताल–लिपि की जानकारी। ताल के 10 प्राणों का विस्तृत अध्ययन।

इकाई 2

घन एवं तत् वाद्यों का सचित्र वर्णन :–

(अ) घंटा, कांस्यताल, जयघंटा, मंजीरा, झांझ।

(ब) सरोद, सारंगी, संतूर, विचित्र वीणा, सितार।

इकाई 3

तबला स्वतंत्र वादन का संक्षिप्त इतिहास तथा विभिन्न घरानों मे तबला एकल वादन का क्रम तथा बारहवीं शताब्दी तक के भारतोय संगीत के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी।

इकाई 4

लखनऊ, बनारस, फर्रूक्खाबद तथा पंजाब घरानों का इतिहास एवं शैलीगत विशेषतायें।

इकाई 5

निम्न वाद्यों का सचित्र वर्णनः–

(अ) मृदंगम, पखावज, तबला, खोल, खंजरी, नाल।

(ब) निम्नलिखित तबला वादकों की जीवनी एवं वादन विशेषताये :–

उस्ताद अबिद हुसैन खॉ, पंडित सामता प्रसाद (गुदई महाराज), पंडित अनोखेलाल, पंडित किशन महाराज, उस्ताद करामतउल्ला खॉ, उस्ताद अल्लारक्खा खॉ, नाना पानसे, राजा छत्रपति सिंह, पं. अयोध्या प्रसाद।

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
विद् डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट अंतिम वर्श (V.D.P.A.)

द्वितीय प्रश्न पत्र–क्रियात्मक सिद्धांत

समय : 3 घंटे

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, मसीतखानी एवं रजाखानी गीत एवं गत प्रकारों की जानकारी। आमद, उठान, कवित्त्, तत्कार तोड़े आदि की उदाहरण सहित व्याख्या।

इकाई 2

कायदा, एवं रेले के रचना सिद्वांत तथा प्रस्तार नियम।त्रिताल, झपताल तथा रूपक ताल में विभिन्न कायदे एवं रेले (विस्तार सहित) लिपिबद्ध करने ज्ञान।

इकाई 3

निम्नलिखित तालों के ठेके–आड़(3/2), कुआड़(5/4), तथा बिआड़(7/4) की लयकारी में लिखने का अभ्यास – रूपक, झपताल, एकताल, आड़ाचारताल, सवारी (15 मात्रा) तीन ताल।

इकाई 4

गत एवं गत के विभिन्न प्रकारों की जानकारी। तबला स्वत्रंत वादन एवं संगति के सिद्धांत।

इकाई 5

किसी तिहाई के बोलों को न बदलते हुए इसे अन्य तालों में सम से सम तक समायोजित करना व ताल लिपि में लिखना। निम्नलिखित की उदाहरण सहित परिभाषाएं :– परन, कमाली परन, फरमाईशी परन, चक्करदार परन, तिहाई, नौहक्का।

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
विद् डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट अंतिम वर्श (V.D.P.A.)

क्रियात्मक

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

1. त्रिताल, झपताल व रूपक के अतिरिक्त एक ताल में सम्पूर्ण स्वत्रंत वादन।
2. त्रिताल में लखनऊ, बनारस, फर्रूक्खाबाद घरानों की विशेषताओं को प्रदर्शित करने की क्षमता।
3. एकताल, तिलवाड़ा, झूमरा एवं दीपचंदी तालों को संगति की दृष्टि से विलंबित लय में बजाने का अभ्यास।
4. आडा चौताल मे मुखड़े, टुकड़े एवं तिहाईयों को बजाना।
5. दी गई तिहाई को दम और लय मे परिवर्तन के द्वारा विभिन्न तालों मे समायोजित करना।
6. कहरवा, रूपक एवं दादरा मे लग्गियां एवं तिहाईयां को बजाने का अभ्यास।
7. त्रिताल, झपताल एवं रूपक को आड़ की लयकारी मे पढ़ना एवं बजाना ।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
4. ताल परिचय भाग 1 एवं 2 – श्री गिरीष चन्द्र श्रीवास्तव